M.A. SEMI Paper I

कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग,
महाराजा कॉलेज

प्रश्न- भाषा की उत्पत्ति के प्रमुख सिद्धांतों की समीक्षा करें।

उत्तर- भाषा मानव के व्यवहार एवं प्रकृति का मुख्य साधन है। मनुष्य के समस्त क्रियाकलाप एवं आचरण भाषा के माध्यम से ही सम्पन्न होते हैं। मनुष्य युगों से भाषा बोलता आया है किन्तु आज तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि वास्तव में भाषा का प्रारंभ कब हुआ? प्रसिद्ध विद्वान मैरियो ए० पाई के अनुसार सभी भाषावैज्ञानिक केवल इस बात पर एकमत हैं कि भाषा उत्पत्ति का संतोषजनक उत्तर नहीं दिया जा सकता। लेकिन सत्य तो यह है कि वर्तमान पीढ़ी ने अपने पूर्वजों से भाषा सीखी और उन पूर्वजों ने अपने पूर्वजों से। सीखने की इस परंपरा का प्रारंभ कब हुआ इस संबंध में अनेक सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं। इन समस्त सिद्धान्तों के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दो कोणों में अध्ययन किया जा सकता है।

प्रत्यक्ष मार्ग

इसके अंतर्गत निम्नलिखित सिद्धांतों की उद्भावना हुई है-

(1) दैवी या दिव्य उत्पत्तिवाद (Divine origin theory) - इस सिद्धांत के अनुसार भाषा ईश्वरीय देन है। जो कि सृष्टि की भाँति एकाएक उत्पन्न हुई है। मानव मन में विचारों और भावों की सृष्टि उसी ईश्वर ने किया है। विभिन्न धर्माचार्य ने इस सिद्धांत पर अपनी आस्था व्यक्त करते हुए अपनी अपनी धर्मपुस्तक की भाषा को आदि भाषा सिद्ध करते हैं। इस प्रकार हिन्दू संस्कृत को, बौद्ध पालि को, कैथोलिक ईसाई Old Testament की भाषा को मुसलमान कुरान की भाषा को आदि भाषा बतलाते हैं। वैदिक धर्मावलम्बियों के अनुसार 'ऋग्वेद में कहा गया है -

"दैवी वाचमजयन्त देवा: तां विश्वरूपा: पशवो वदन्ति।"

अर्थात् देवों ने वाणी को उत्पन्न किया है तथा सब प्राणी उसी को बोलते हैं। किंतु यह सिद्धांत भाषा की उत्पत्ति की समस्या का तर्कसंगत समाधान प्रस्तुत करने में असमर्थ है। ईश्वर प्रदत्त कोई भाषा नहीं है.

Scanned with CamScanner

और ऐसा मानना अंधविश्वास मात्र है। भाषा यदि ईश्वरकृत होती तो पूरे विश्व की भाषा एक होती, उसमें परिवर्तन और परिवर्द्धन भी नहीं होता, वह पूर्ण और युक्तिसंगत होती।

(2) सांकेतिक उत्पत्तिवाद या निर्णय-सिद्धान्त - इस सिद्धान्त के प्रथम प्रतिपादक फ्रांसीसी विचारक रूसो हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार भाषा एक सांकेतिक संस्था है। मनुष्यों ने जब देखा कि हाथ आदि के संकेतों से कार्य नहीं चला सकता तो एकत्र होकर भाषा का निर्माण किया, शब्दों के अर्थों का निर्धारण किया। यह सिद्धान्त भी परीक्षण की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है क्योंकि यदि पहले संकेत निर्धारण के लिए कोई भाषा थी तो नवीन भाषा की आवश्यकता ही क्यों पड़ी?

(3) धातु सिद्धान्त → इस सिद्धान्त की स्थापना मैक्समूलर ने की थी किन्तु इसकी प्रेरणा उन्हें प्रोफेसर हेस (Heyse) से मिली थी। इस सिद्धान्त के अनुसार संसार की हर चीज की अपनी एक ध्वनि है। यदि हम एक डण्डे से एक काठ लोहे, सोने, कपड़े, कागज आदि पर चोट मारें तो प्रत्येक में से भिन्न प्रकार की ध्वनि निकलेगी। प्रारंभिक मानव में भी ऐसी सहज शक्ति थी। वह जब किसी बाह्य वस्तु के सम्पर्क में आता था तो उसके मुँह से एक प्रकार की ध्वनि निकल जाती थी। इन्हीं धातुओं से भाषा की उत्पत्ति हुई है। यह मत भी तर्कसम्मत नहीं है। क्योंकि धातुओं से भाषा के विकास की कल्पना केवल मैक्समूलर के मस्तिष्क की उपज है। भाषा का विकास धातुओं से न होकर वाक्यों से हुआ है। यही नहीं विश्व की समस्त भाषाएँ धातुओं पर निर्भर नहीं हैं। चार या पाँच सौ धातुएँ भी कम हैं, क्योंकि संस्कृत में ही 1470 धातुएँ हैं।

Scanned with CamScanner

(4) अनुकरण मूकवाद – इस सिद्धांत के अनुसार मनुष्य ने पशु पक्षियों के अनुकरण पर भाषा का निर्माण किया है। उदाहरण के लिए कोयल को कुहू-कुहू करते सुनकर उससे कुहू, कुक्कू आदि कहने लगा। बिल्ली को म्याऊँ करते सुनकर उसे म्याऊँ कहा। पेड़ के गिरते हुए पत्ते की ध्वनि के आधार पर उसे पत्, पत कहा। नदी के पानी की धारा नद नद ध्वनि के आधार पर नदी कहा जाने लगा। यह सिद्धान्त भी भाषा की उत्पत्ति का समाधान करने में असमर्थ है फिर भी कुछ शब्द अवश्य ही प्रत्येक भाषा में मिल जाते हैं जो इस सिद्धान्त के योगदान का समर्थन करते हैं।

(5) आवेग सिद्धान्त या मनोभावाभिव्यंजनावाद – इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य विभिन्न अवसरों पर सुख-दुःख, घृणा-क्रोध, प्रेम आदि के भावों को व्यक्त करता है। उस समय उसके मनोवेग विभिन्न ध्वनियां को उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार अकस्मात् मुख से उत्पन्न ध्वनियों में हाय आह ओह 'ओ' आदि शब्द हैं इस मत को मानने में अनेक कठिनाइयाँ हैं। पहली तो यह कि इस प्रकार के शब्द भाषा के प्रधान अंग नहीं हैं, इसकी संख्या भी अल्प है। ये शब्द स्वाभाविक न होकर सांकेतिक हैं।

(6) श्रम परिहरण मूलकतावाद या यो-हे-हो वाद – इस सिद्धान्त के प्रतिष्ठापक नायर का मत है कि मनुष्य परिश्रम के बाद अपनी श्वास-प्रश्वास की क्रिया के द्वारा अपने परिश्रम और थकान को दूर करता है। उस समय उसके मुख से कुछ ध्वनियों का उच्चारण होता है। सड़क कूटने वाले मजदूर, कपड़े धोनेवाले धोबी, मल्लाह आदि हियो-हियो, हूँ हूँ, छी-छी आदि विभिन्न ध्वनियों को उत्पन्न करते हैं। ये ध्वनियां इनकी थकान को दूर करते हैं इन ध्वनियों से भाषा का निर्माण तथा उत्पत्ति हुई है। किन्तु इन शब्दों का एक भाषा के जीवन में विशेष महत्व नहीं है, क्योंकि इनकी सं० बहुत थोड़ी है।

Scanned with CamScanner

फिरभी ये शब्द भाषा की उत्पत्ति की समस्या के समाधान में आंशिक रूप से सहयोग करता है।

(घ) सामाजिक समझौते का सिद्धांत — इस सिद्धांत के प्रतिपादक विचारक 'हॉब्स' 'लॉक' तथा रूसो को बताया जाता है। इनका मत है कि जब मनुष्य समुदाय का काम आरम्भिक संकेतों से नहीं चल पाया तो समुदाय ने मिल जुल कर यह निश्चय किया कि अमुक वस्तु का नाम अमुक रखा जाय। इस प्रकार मिल जुल कर समझौते के द्वारा एक भाषा का निर्माण कर लिया गया। समीक्षा कि इस कसौटी पर कसने पर यह सिद्धांत भी तर्कसम्मत नहीं है। यदि यह मान लिया जाय कि समझौते के पहले कोई भाषा नहीं थी केवल संकेत मात्र थे तो प्रश्न यह उठता है कि मानव समुदाय में समझौते तक पहुँचने के लिए, विचार विमर्श में किस साधन का प्रयोग किया होगा? अतः यह सिद्धांत भी वैज्ञानिक नहीं है।

(ङ) विकासवाद का सिद्धान्त — आज का युग विकासवाद पर विश्वास करता है। मानव और उसकी सामाजिक संस्थाओं का आरंभ विकास के आधार पर माना जाता है। भाषा का प्रारंभ भी विकासवाद के अनुरूप हुआ। जब से मानव ने सोचना आरंभ किया तभी से भाषा का भी आरंभ हुआ। यद्यपि मनोविज्ञान अभी यह निर्णय नहीं दे पाया है कि मनुष्य ने कब से सोचना आरंभ किया तो जब यह निर्णय हो जाएगा कि मानव ने सोचना कब आरंभ किया तभी यह निर्णय भी हो जाएगा कि भाषा का आरंभ कब हुआ। जैसे-जैसे मानव समाज की आवश्यकताओं का विकास होता गया भाषा का भी विकास होता गया। इस सिद्धांत के मूल प्रवर्तक डार्विन माने जाते हैं। मनुष्य एक सामाजिक निधि है और विकासवाद के अनुरूप उसका भी विकास हुआ है। वास्तव में भाषा भी एक सामाजिक निधि है और उसका समाज के साथ विकास होना स्वाभाविक है।

विकासवाद की वैज्ञानिकता — आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकासवाद का बोलबाला है। डार्विन के प्रतिस्पर्धि

विकास के सिद्धान्त ने समाज की उत्पत्ति संबंधी अनेक समस्याओं का हल प्रस्तुत कर दिया है। भाषा के संबंध में भी यह सिद्धान्त वैज्ञानिक दृष्टि से मान्य है। किन्तु भाषा के प्रारंभिक स्वरूप का ठीक ठाक ज्ञान तभी प्राप्त हो सकता है, जब विकास की श्रृंखला की वह कड़ी जिसका अब तक पता नहीं चल पाया है, मिल जाए। हेनरी स्वीट ने भाषा की उत्पत्ति के प्रश्न पर समाधान इसी विकासवाद के आधार पर किया है। अतः आज भाषा वैज्ञानिक समन्वित विकासवाद के प्रति अपनी आस्था व्यक्त कर विकासवाद को महत्व देते हैं।

(9) समन्वयवाद - प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक स्वीट ने भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विकासवाद का समन्वय कुछ अन्य वादों से भी कर दिया है। इनका विचार है कि भाषा के आरंभ के संबंध में विकासवाद तो मान्य है इसमें साथ में अनुकरण, अनुरणन, मूलकतावाद, भावावेशाभिव्यक्तिवाद, प्रतीकवाद आदि का भी योग है।

(10) इंगित सिद्धान्त - इस सिद्धांत के अनुसार मनुष्य ने अपने अंगों या आंगिक चेष्टाओं का हीं वाणी के द्वारा अनुकरण किया और उसी से भाषा की उत्पत्ति हुई। इस मत के समर्थक डॉ राये, डार्विन, स्विर्ड, जोहानसन आदि भाषा विद्वानी हैं। यह सिद्धान्त सारहीन है। मनुष्य के अपने हीं अंगो का अनुकरण का क्या अर्थ है? अपने ही हाथ पैर का अनुकरण। पशु पक्षी भी ऐसा नहीं करते फिर मनुष्य जैसा बौद्धिक प्राणी ऐसा क्यूँ करेगा? अतः यह सिद्धान्त अमान्य है।

(11) टाटा सिद्धान्त - आदि मानव काम करते समय जाने अनजाने उच्चारण अवयवों से काम करनेवाले अवयवों की गति का अनुकरण करता था। इस अनुकरण में कुछ ध्वनियों और ध्वनि संयोगों से शब्दों का उच्चारण हो जाया करता था। इन्ही ध्वनियों और शब्दों से भाषा की उत्पत्ति हुई। भाषा उत्पत्ति का प्रश्न इससे सुलझता नहीं हैं क्योंकि ऐसा अनुकरण न तो आज का सभ्य मानव करता है और न असभ्य या अविकसित मानव। इस तरह यह सिद्धान्त भी अमान्य है।

Scanned with CamScanner

⑫ क्रीड़ावाद या संगीत सिद्धांत — भाषा विद् युसर्सन कहते हैं कि भाषा की उत्पत्ति क्रीड़ा के रूप में हुई। खेल खेल में लोगों के मुख से गति के बोल निकले, जिससे अर्थविहीन अक्षरध्वनें। विशेष स्थिति में उनका प्रयोग होने से उन अक्षरों से अर्थ का सम्बन्ध हो गया। डार्विन और स्पेंसर ने भाषा की उत्पत्ति मानव के संगीत अर्थात् गुनगुनाने से मानी जाती है। गुनगुनाने की बात अनुमान पर ही आधारित है अतः यह भी अस्वीकार्य सिद्धांत है।

⑬ सम्पर्क सिद्धान्त — प्रो० जी० रेवेज ने बाल मनोविज्ञान, पशु मनोविज्ञान तथा आदिम अविकसित मनुष्य के मनोविज्ञान के सहारे यह सिद्धान्त रचा है। 'सम्पर्क' का अर्थ है - सामाजिक जीवों में आपसी संपर्क रखने की सहजवृत्ति। सम्पर्क के लिए ध्वनि की भी आवश्यकता पड़ी उस समय सम्बन्धियों एवं वस्तुओं के लिए शब्द रहे होंगे किन्तु उनका संबंध संज्ञा से न होकर क्रिया से रहा होगा फिर और विकास होने पर कई प्रकार के शब्दों को मिलाकर छोटे-छोटे वाक्य बने होंगे। इस प्रकार भाषा की उत्पत्ति एवं विकास हुआ। यह सिद्धान्त भी अपूर्ण लगता है और भाषोत्पत्ति के सिद्धान्तों पर खरा नहीं उतरता है।

परोक्ष मार्ग

यस्पर्सन के अनुसार भाषा के मूल तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित तीन तत्वों का अध्ययन विशेष लाभकारी है —

① बच्चों की भाषा — बच्चे के पास भाषा की शक्ति नहीं होती है। वह प्राकृतिक रीति द्वारा ही अपने उद्गारों को प्रकट करता है। इसलिए वह भाषा को जिस रूप में अपनाता है उसमें भाषा के मौलिक रूप की झलक मिलती है। किन्तु इस विधि के साथ एक कठिनाई है। उनके माता-पिता भाई बहन आदि जिस भाषा को बोलते हैं, उसी को वह सीखता है इसलिए भाषा के स्वरूप के ज्ञान के विषय में कभी कभी वह भ्रामक तथ्य भी दे सकता है। इसे पूर्णतः विश्वसनीय नहीं माना जा सकता।

Scanned with CamScanner

(2) असभ्य जातियों की भाषा का अध्ययन — कुछ विद्वान असभ्य जातियों का अध्ययन कर भाषा की आदि प्रकृति का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। उन्होंने इस कार्य के लिए अफ्रीका तथा अमरीका की आदि जातियों को लिया, जिनकी आज की शैली वही है जो अब से हजारों वर्ष पूर्व थी। किन्तु उनके अध्ययन के आधार पर भी भाषाओं पर, प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से अनेक प्रभाव पड़ चुके हैं। और इसमें परिवर्तन भी हो चुका है।

(3) भाषा सम्बन्धी ऐतिहासिक खोज — इस विधि से अध्ययन करनेवाला भाषा के वर्तमान साहित्यिक रूप को लेकर उसके पिछले ऐतिहासिक स्वरूपों का अध्ययन करता जाता है और उसके प्राचीनतम स्वरूप तक पहुँच जाता है। इसी प्रकार वह दूसरी भाषा लेता है और उसके भी विगत ऐतिहासिक स्वरूप का अध्ययन करता जाता है। दोनों भाषाओं की तुलना करता है और उसके सहारे भाषा की मूल प्रकृति के जानने का प्रयास करता है। इस विधि की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि साहित्यिक भाषा को आधार मानकर चलना होता है और साहित्यिक भाषा, भाषा विज्ञान के अध्ययन का विषय नहीं है। इतना अवश्य है कि इस विधि से भाषा के आदि स्वरूप की कल्पना के आस पास अवश्य पहुँचा जा सकता है।

सारतः कहा जा सकता है कि समाज के विकास और आवश्यकता के साथ साथ भाषा में विकास एवं विस्तार होता रहा है और भविष्य में होता रहेगा।